



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
Times of India	18.8.22	3	4-5

HAU develops new mustard varieties

Kumar Mukesh | TNN

Hisar: Scientists of the Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (CCSHAU), Hisar, have developed two improved varieties of mustard seeds. Besides Haryana, these varieties will also benefit the farmers of Punjab, Delhi, north Rajasthan and Jammu.

University vice-chancellor professor B R Kamboj said their oilseeds scientists have developed RH 1424 and RH 1706 varieties of mustard. In the meeting of the All-India Coordinated Research Project (mustard) organised at Rajasthan Agricultural Research Institute, Durgapur, Rajasthan, these mustard varieties have been identified for cultivation.

The vice-chancellor said that RH 1424 has been identified for cultivation under timely sown and ra-

in-fed conditions, whereas RH 1706 is a value-added variety with enhanced oil quality (less than 2.0% erucic acid content) and is recommended for timely sown and irrigated areas of the states.

Enumerating characteristics of these varieties, university director of research Dr Jeet Ram Sharma said that mustard variety RH 1424 had average seed yield of 26.0 q/ha with 14% increase over the popular variety RH 725 in rain-fed trials.

It matures in 139 days and has 40.5% oil content in its seeds. Likewise, mustard variety RH 1706 has improved the quality of oil with less than 2% erucic acid which will benefit the health of consumers.

The variety's average seed yield is 27.0 q/ha. It takes 140 days to mature and possesses 38.0% oil in its seeds, he said.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समालूप पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दृष्टि • मृदुभाष	१९.४.२२	१	२५

घास से पैदावार में 40% तक आ सकती है कनी

■ छृष्टि के वैज्ञानिक किसानों को गाजर घास के नुकसान के प्रति कर रहे जागरूक

हरिगूड़ि न्यूज़ » अहिसार

गाजर घास न केवल फसलों के लिए हानिकारक है बल्कि यह शाक इसानों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। इसको ध्यान में रखते हुए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कदी में विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र में गाजर घास जागरूकता संशाह व उन्मूलन अभियान चलाया गया जिसका कृषि महाविद्यालय के



हिसार। गाजर घास जागरूकता संशाह के शुभारंभ अवसर पर फ़िलेट का विमोचन करते हुए मुख्यालिय डॉ. एस.के. पाहुजा

फोटो : हरिभूमि

अधिकारी डॉ. एस.के. पाहुजा ने शुभारंभ किया। उन्होंने कहा गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक कमी हो जाती है। इसलिए समय रहते समन्वित प्रबंधन से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम का आयोजन सम्बन्धित विभाग द्वारा जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा रहा है। सम्बन्धित विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. उकराल ने अपने संबोधन में कहा कि इस घातक शाक के संपर्क में

बहु एवं उत्तम

इस अवसर पर ऊर्ध्व विज्ञान विभाग द्वारा वैज्ञानिक डॉ. ए. के. द्रक्कन, डॉ. परवीन कुमार, डॉ. सतपाल, डॉ. तमिला, डॉ. कौटिल्य, डॉ. शुभेश कुमार, डॉ. विष्णि कामलेश, डॉ. जार पर, वामदेवन, विद्यार्थी व कर्मचारी भी बैठुद दी। इस कार्यक्रम के अंतर्गत हरियाणा के विभिन्न जिसों में स्थापित कृषि विज्ञान केंद्रों के नवाचय और विकल्पों को बताने के लक्ष्य दी।

आने से मनुष्यों में परिज्ञान, एलजी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां हो जाती हैं। उन्होंने इस शाक को समृद्धिक रूप से बिलकर जड़ से मिटाने का आह्वान किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समूक्तर पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एन्ड जाइट	१९.३.२२	५	७-८

गाजर धास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत हो सकती है कमी



जगरूकता सप्ताह के शुभारम्प पर एक्स्ट्रेंट का विमोचन करते डा. एसके पाहुजा। • गौड़जे

जगरूकता संवादाता, हिसार : गाजर धास न केवल फसलों के लिए हानिकारक है बल्कि वह शाक ईसानों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। इसके ब्यान में स्खते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर धास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं।

इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र में गाजर धास जगरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। जिसका कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डा. एसके पाहुजा ने शुभारंभ किया। उन्होंने कहा गाजर धास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक कमी हो जाती है। इसलिए समय रहते समन्वित प्रबंधन से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आयोजन सम्य विभाग विभाग हारा जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा-

रहा है। विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. एसके ठकराल ने अपने संबोधन में कहा कि इस चातक शाक के संपर्क में आने से मनस्त्रों में एंजिज्मा, एलजी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां हो जाती हैं। उन्होंने इस शाक को सामूहिक रूप से मिलकर जड़ से मिटाने का आह्वान किया। इस अवसर पर अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केन्द्र के मुख्य अन्वेषक, डा. टोडरमल पूनिया ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहू के साथ साल 1955 में हुआ था। अब यह पौधा संभवत देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। इस अवसर पर सम्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डा. एस. ढाका, डा. परवीन कुमार, डा. सतपाल, डा. कविता, डा. कौटिल्य, डा. मुरील, डा. निधि कामोज, डा. आर.एस. दादरवाल व अन्य मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
छजाँड़ मसरी	१९.८.२२	३	१

गाजर धास से फसल की
पैदावार में ४० प्रतिशत तक
हो सकती है कमी

हिसार, १८ अगस्त (ब्यरो): गाजर धास न केवल फसलों के लिए हाँनकारक है, बल्कि यह आक इसनों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लोगों द्वारा प्रदेश भर में गाजर धास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कही में विश्वविद्यालय के अनुसंधान केन्द्र में गाजर धास जागरूकता सकारात्मक उन्मूलन अधिकारी डॉ. एस.के. पाहुजा ने सुधारें भ किया।

उन्होंने कहा गाजर धास से फसल की पैदावार में ४० प्रतिशत तक कमी हो जाती है। इसलिए उन्हें रहते समान्वय प्रबंधन से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आधार जन सत्य विज्ञान विभाग द्वारा जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा रहा है। सत्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने अपने संबोधन में कहा कि इस आतक शाक के संपर्क में जाने से मरुधर्दी में परिजना, एलजी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां हो जाती हैं। उन्होंने इस शाक को समृद्धिक रूप से बिलकुल जड़ में मिटाने का आवान किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आज सभाज	18.8.2022	--	--

चौ.च.सिं. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने विकसित की सरसों की दो उन्नत किस्में

- हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभः कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

प्रधीन कुमार

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई है। उन्होंने कहा ये किस्में उपरोक्त सरसों उगाने वाले राज्यों की उत्पादकता को बढ़ाने में मौलिक पत्तर सहित होंगी। कुलपति ने बताया कि हरियाणा पिछले कई वर्षों से सरसों फसल की उत्पादकता के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर है। यह इस विश्वविद्यालय में सरसों की अधिक उपज देने वाली किस्मों के विकास और किसानों द्वारा उन्नत तकनीकों को अपनाने के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुग्धपुर



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों की टीम के साथ।

(राजस्थान) में अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई है। उन्होंने कहा ये किस्में उपरोक्त सरसों उगाने वाले राज्यों की उत्पादकता को बढ़ाने में मौलिक का पत्तर सहित होंगी। कुलपति ने बताया कि हरियाणा पिछले कई वर्षों से सरसों फसल की उत्पादकता के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर है। यह इस विश्वविद्यालय में सरसों की अधिक उपज देने वाली किस्मों के विकास और किसानों द्वारा उन्नत तकनीकों को अपनाने के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुग्धपुर

यह है सरसों की किस्मों की विशेषताएँ : अनुसंधान निदेशक डॉ. जीरु गम शर्मा ने बताया कि बाएँनी परीक्षणों में नव विकसित किस्म आरएच 1424 में लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 विवरण प्रति हेक्टेयर की औसत बीज उपज दर्ज की गई है। सरसों की दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इलेक्ट्रिक एसिड होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है जिसका उपयोग काओं के स्वास्थ्य को लाभ होगा। यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 विवरण

हेक्टेयर है। इसके बीजों में 38 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है।

अब तक सरसों की विकसित की हैं 21 उन्नत किस्में : विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिकारी एवं आनुवॉशिकी व पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय देश में सरसों अनुसंधान में अग्रणी केंद्र है और अब तक वहां अच्छी उपज थमता वाली सरसों की कुल 21 किस्मों को विकसित किया गया है।

तिलहन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम : सरसों की इन किस्मों को तिलहन वैज्ञानिकों की टीम द्वारा विकसित किया गया है। इस टीम में डॉ. गम अबबार, डॉ.के. शोणग, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विषेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाग चंद, राकेश पुन्नग, निशा कुमारी, विनोद गोवल, दलोप कुमार, श्वेता, कीर्ति पट्टम, महावीर और गजबीर सिंह शामिल हैं। कुलपति ने वैज्ञानिकों की इस टीम को बधाई दी और उन्हें भविष्य में भी सरसों की उपज किस्मों के विकास का कारबंद जारी रखने को कहा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आज सभापत्र	18.8.2022	--	--

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने विकसित की सरसों की दो उन्नत किस्में आज समाज नेटवर्क

चंडीगढ़। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों के किसानों को भी लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के प्रबन्धना ने बताया कि विश्वविद्यालय के तिलाहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं।

इन किस्मों की अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुग्धपुर (राजस्थान) में अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई है।

उन्होंने बताया कि आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर बुधाई और बारानी परिस्थितियों में खेती के लिए जबकि आरएच 1706 जोकि एक मूल वर्धित किस्म है, इन राज्यों के सिंचत क्षेत्रों में समय पर बुधाई के लिए बहुत उपयुक्त किस्म पहुंच गई है।

उन्होंने कहा कि ये किस्में उपरोक्त सरसों उगाने वाले राज्यों की उत्पादकता को बढ़ाने में मोल का पथर साबित होगी। उन्होंने बताया कि हरियाणा कई

■ हरियाणा के साथ-
साथ अन्य राज्यों के
किसानों को भी
मिलेगा लाभ



वर्षों से सरसों की फसल की उत्पादकता के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर है।

यह इस विश्वविद्यालय में सरसों की अधिक उपज देने वाली किस्मों के विकास और किसानों द्वारा उन्नत तकनीकों को अपनाने के कारण संभव हुआ है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय देश में सरसों अनुसंधान में अग्रणी केंद्र है और अब तक यहां अच्छी उपज क्षमता वाली सरसों की कुल 21 किस्मों को विकसित किया गया है।

हाल ही में यहां विकसित सरसों की किस्म आरएच 725 कई सरसों उगाने वाले राज्यों के किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
--------------------	--------	--------------	------



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ज्ञानीत समाचार	१९.४.२२	१	१-५

हक्की के वैज्ञानिक किसानों को गाजर घास के नुकसान प्रति कर रहे जागरूक गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक हो सकती है कमी



गाजर घास जागरूकता सप्ताह के शुभारंभ अवसर पर पैफलेट का विमोचन करते हुए मुख्यालियि डॉ. एस.के. पाहुजा।

हिसार, 18 अगस्त (विरेंद्र वर्मा) : गाजर घास न केवल फसलों के लिए हानिकारक है बल्कि यह शाक इसानों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। इसको ध्यान में रखते हुए 5 चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक डॉ. लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र में गाजर घास 5 जागरूकता सप्ताह व उत्तमूलन अभियान चलाया गया जिसका कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. कृष्ण के. पाहुजा ने शुभारंभ किया। उन्होंने कहा गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक कमी हो जाती है। इसलिए समय सहते समन्वय विकास से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम का आयोजन सद्य

क्षेत्रफल में फैल चुका है। जब यह शाक एक स्थान पर जम जाती है, तो अपने आस-पास किसी अन्य पौधे को जमने नहीं देती है जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और चरागाहों के नष्ट हो जाने की सम्भावना पैदा हो गई है। उन्होंने भी प्राकृतिक वनस्पतियों को खत्म होने से बचाने और मानव स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए इसको नियंत्रित किए जाने पर बल दिया।

इस अवसर पर सद्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ. ए. के. ढाका, डॉ. परवीन कुमार, डॉ. सतपाल, डॉ. कविता, डॉ. कौटिल्य, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. निधि काम्बोज, डॉ. आर.एस. दादरवाल, विद्यार्थी व कर्मचारी भी मौजूद थे। इस कार्यक्रम के अंतर्गत हरियाणा के विभिन्न हिस्सों में स्थापित कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से किसानों को गाजर घास के नुकसान के बारे में अवगत करवाया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सूचकान्तर पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
टूली ११८१२	19.8.2022	--	--

हकृवि के वैज्ञानिक किसानों को गाजर घास के नुकसान के प्रति कर रहे जागरूक

हिसार : गाजर घास न केवल फसलों के लिए हानिकारक है बल्कि यह शाक इंसानों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती



है। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के

अनुसंधान केंद्र में गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया जिसका कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता

आवश्यकता है। कार्यक्रम का आयोजन सम्यक विज्ञान विभाग द्वारा जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा रहा है। सम्यक विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने अपने संबोधन में कहा कि इस घातक शाक के संपर्क में आने से मनुष्यों में एमिजामा, एलजी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां हो जाती हैं। उन्होंने इस शाक को समूहिक रूप से मिलकर जड़ से मिटाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर अधिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केन्द्र के मुख्य अन्वेषक, डॉ. टोडरमल पूर्णियां ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आया होने वाले गैरू के साथ साल 1955

गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक हो सकती है कमी

में हुआ था। अब यह पौधा संभवत देश के हर हिस्से में भौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। जब यह शाक एक स्थान पर जम जाती है, तो अपने आस-पास किसी अन्य पौधे को जमने नहीं देती है जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और चरणगाहों के नष्ट हो जाने की सम्भावना पैदा हो गई है। उन्होंने भी प्राकृतिक बनस्पतियों को खत्म होने से बचाने और मानव स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए इसको नियंत्रित किए जाने पर बल दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आज समाज	18.8.2022	--	--

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक प्रदेश भर में गाजर धास के प्रति किसानों को किया जागरूक

आज समाज नेटवर्क

हिसार। गाजर धास न केवल फसलों के लिए हानिकारक है बल्कि यह शाक इंसानों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर धास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र में गाजर धास जागरूकता सप्ताह व उत्तमूलन अभियान चलाया गया जिसका कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एसके पाहुजा ने शुभारंभ किया। उन्होंने कहा गाजर धास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक कमी हो जाती है। इसलिए समय रहते समन्वित प्रबंधन से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आयोजन



गाजर धास जागरूकता सप्ताह के शुभारंभ अवसर पर पैफलेट का विमोचन करते हुए मुख्यातिथि डॉ. एसके पाहुजा।

आज समाज

सत्य विज्ञान विभाग द्वारा जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा रहा है। सत्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसके ठकराल ने अपने सबोधन में कहा कि इस धातक शाक के संपर्क में आने से मनुष्यों में एरिजमा, एलजी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां हो जाती हैं। उन्होंने इस शाक को समूहिक रूप से मिलकर जड़

से मिटाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केन्द्र के मुख्य अन्वेषक, डॉ. टोडरमल पूनिया ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आया होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था। अब यह पौधा संभवत देश के हर हिस्से में मौजूद है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्प्रचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
बृहत् कृष्ण	18.8.2022	--	--

गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक हो सकती कमी: पाहुजा

- एचएयू वैज्ञानिक विभागनों के गाजर घास के नुकसान के प्रति कर रहे जागरूक
- (डॉ.)।

हिसार। गाजर घास न केवल फसलों के लिए लानिकरक है वैज्ञानिक यह शाक इसानी के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। इसके ब्यास में रखने से तुएँ हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कार्य में विश्वविद्यालय के अनुसंधान सेवा में गाजर घास जागरूकता यत्नालय व उन्मूलन अधिकारीय चलाया गया विज्ञान कृषि विश्वविद्यालय के अधिकारी डॉ. एसके पाहुजा ने सुधारें बिंदू दिया।

उन्होंने कहा गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक कमी



गाजर घास जागरूकता यत्नालय के शुभारंभ अवसर पर एफलेट का विस्तृत करते हुए बुद्ध्य अधिकारी डॉ. एसके पाहुजा।

हो जाती है। इसलिए समय रहते समीन्वयन प्रबंधन से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने को जागरूकता है। कार्यक्रम का आकेन्द्रन सरकर विभाग द्वारा जबलपुर के स्वरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा रहा है। सरकर विभाग विभाग के अधिकारी डॉ. एसके उच्चासल ने

अपने शब्दोंमें कहा कि इस घासक के संपर्क में आने से मृगों में परिजना, एलजी, बुद्ध्य, या जैसी जीमरियां हो जाती हैं। उन्होंने इस घासक को सामृद्धिक रूप से मिलकर जह से बिटाने का अल्पान किया।

आखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान गटियोजना हिसार केन्द्र

के मुख्य अन्वेषक, डॉ. टोडरमल पुनिया ने बताया कि इस घोष का प्रयोग हमारे देश में अमेरिका से अद्यता होने वाले गेहू के साथ साल 1955 में हुआ था। अब यह घोष सभवत देश के हर हिस्से में गौन्दू के माध्यम से किसानों को गाजर घास के नुकसान के बारे में अवगत कराया जाएगा।

इस अवसर पर सरकर विभाग के वैज्ञानिक डॉ. एस. दास, डॉ. परवीन कुमार, डॉ. सतपाल, डॉ. करिका, डॉ. कॉटेल्ड, डॉ. सुरेन कुमार, डॉ. निधि कम्बोज, डॉ. आरएस दादरबाल, विद्यार्थी य कर्मचारी भी मौजूद थे। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सीरिया के विभिन्न हिस्सों में स्थापित कृषि विभाग केंद्रों के माध्यम से किसानों को गाजर घास के नुकसान के बारे में अवगत कराया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
श्री पत्र	18.8.2022	--	--

वैज्ञानिक किसानों को गाजर धास के प्रति कर रहे जागरूक

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। गाजर धास न केवल फसलों के लिए हानिकारक है बल्कि यह शाक इसानों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर धास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं।

इसी क्षेत्र में विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र में गाजर धास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया जिसका कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने शुभारंभ किया। उन्होंने कहा गाजर धास से फसल



फैलेट का विमोचन करते हुए गुरुत्यातिथि डॉ. एस.के. पाहुजा।

को पैदावार में 40 प्रतिशत तक कमी हो जाती है। इसलिए समय रहते समन्वित प्रबंधन से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आयोजन समय विज्ञान विभाग द्वारा जबलपुर के खरपतवार

अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा रहा है। समय विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने अपने संबोधन में कहा कि इस घातक शाक के सपके में आने से मनुष्यों में एंजिमा, एलजी, बुखार, दमा जैसी

बीमारियां हो जाती हैं।

इस अवसर पर अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केन्द्र के मुख्य अन्वेषक, डॉ. टोडर मल पूनिया ने बताया कि इस पौधे का प्रबोध हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था। अब यह पौधा संभवत देश के हर हिस्से में पौजूद है और लगभग 35 गिलियन हेक्टेएर क्षेत्रफल में फैल चूका है।

इस अवसर पर डॉ. ए. के. दाका, डॉ. पर्वीन कुमार, डॉ. सतपाल, डॉ. कविता, डॉ. कौटिल्य, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. निधि काम्बोज, डॉ. आर.एस. दादरवाल भी मौजूद थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम समाझूट दैरेखण्ड	दिनांक 18.8.2022	पृष्ठ संख्या --	कॉलम --
--	----------------------------	---------------------------	-------------------

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक किसानों को गाजर धास के नुकसान के प्रति कर रहे जागरूक हिसार (समस्त हरियाणा न्यूज)। गाजर धास न केवल फसलों के



लिए जानिकारक है बल्कि यह शाक इंसानों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर धास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र में गाजर धास जागरूकता समाह व उम्मूलन अभियान चलाया गया जिसका कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एस.के. पाहुजा ने शुभारंभ किया। उन्होंने कहा गाजर धास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक कमी हो जाती है। इसलिए समय रहते समान्वित प्रबंधन से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आयोजन सस्य विज्ञान विभाग द्वारा जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा रहा है। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने अपने संबोधन में कहा कि इस घातक शाक के संपर्क में आने से मनुष्यों में एंजिमा, एलजी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां हो जाती हैं। उन्होंने इस शाक को समूहिक रूप से मिलकर जड़ से मिटाने का आह्वान किया। इस अवसर पर अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केन्द्र के मुख्य अन्वेषक, डॉ. टोडरमल पूर्णियां ने बताया कि इस पौधे का प्रबोध हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहू के साथ साल 1955 में हुआ था। इस अवसर पर सस्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ. ए. के. लाला, डॉ. परवीन कुमार, डॉ. सतपाल, डॉ. कविता, डॉ. कौटिल्य, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. निधि काम्बोज, डॉ. आर.एस. दावरवाल, विद्यार्थी व कर्मचारी भी मौजूद थे। इस कार्यक्रम के अंतर्गत हरियाणा के कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से किसानों को गाजर धास के नुकसान के बारे में अवगत करवाया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Tribune	19.8.22	2	7-8

RESULTS OF ENTRANCE EXAMS DECLARED

Hisar: Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University has declared the results of the entrance examinations that were conducted for admission to the undergraduate, postgraduate, PhD courses, BSc Agriculture (four years) and (six years) courses. Controller of Examinations of the university Dr Pawan Kumar said candidates could see the results on the university's website admissions.hau.ac.in and hau.ac.in.



चौधरी चरण सिंह हारेयाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
छुट्टी भूमि	१९.८.२२	१	१५

हक्किंगे घोषित ल्जातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी ने दाखिले के लिए परिणाम

बीएससी (आनजी) की प्रवेश परीक्षा में काजल प्रथम

■ विश्वनेई के इस्तीफा के बाद प्रशासन ने की उपचुनाव तैयारियां शुरू

हरियाणा न्यूज़ ►► हिसार



हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने बीएससी एग्रीकल्चर चार व छह वर्षीय पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित करने के बाद बृहस्पतिवार को शेष सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आयोजित की गई प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम घोषित

कर दिए हैं। बीएससी (आनजी) कम्प्यूनिटी साइंस में काजल प्रथम, नवकोरत कौर द्वितीय और धूर्णिमा तीसरे स्थान पर रही हैं जबकि बीएफएससी में नीरज सिंह ने पहला, प्रिया ने दूसरा और दुलबुल ने तीसरा स्थान पाया है। इसी प्रकार एमएससी एग्रीकल्चर में दाखिले के लिए आयोजित की गई

पूजा और कनिका क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रही हैं। एमएससी गृह विज्ञान में आरती प्रथम, कामना द्वितीय व नैन्ती तृतीय रही हैं। एमटेक एग्रीकल्चर, इंजीनियरिंग में गौरव व गुरीत क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहे हैं। एमएससी समाजशास्त्र में

सुमेधा सिंह प्रथम व बरखा दुसरे स्थान पर रही। एमएससी भौतिक विज्ञान में शशांक व अनुजा ने क्रमशः पहला व दूसरा स्थान पायी। पीएचडी (सभी विषय) में अचंका कुमावत पहले स्थान पर रही है। विश्वविद्यालय के कुलसंचिव डॉ. एस.के. महता ने बताया कि बीएफएससी चार वर्षीय कोर्स, एमएससी एग्रीकल्चर, एमटेक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग, एमएससी गृह विज्ञान, बीएससी (आनजी) कम्प्यूनिटी साइंस चार वर्षीय पाठ्यक्रम, बीएससी एग्रीविजनेस मैनेजर्मेंट, बीएससी एग्रीकल्चर चार

व छह वर्षीय पाठ्यक्रमों सहित मौलिक विज्ञान एवं मानविकी, मत्स्य विज्ञान व बायोटेक्नोलॉजी महाविद्यालयों के सभी एमएससी और पीएचडी के लिए दो चरणों में प्रवेश परीक्षाएं आयोजित की गई थीं। इनमें से विश्वविद्यालय ने बीते दिन बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय और बीएससी एग्रीकल्चर छह वर्षीय पाठ्यक्रमों के परिणाम घोषित किए थे। परीक्षा नियंत्रक के अनुसार उम्मीदवार सभी परीक्षाओं के परिणाम व इससे संबंधित नवीनतम जानकारियां विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर देख सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	१९.४.२२	५	६.४

हफ्ते ने घोषित किए सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी में दाखिले हेतु आयोजित प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम

हिसार, 18 अगस्त (थिरेंद वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने बीएससी एग्रीकल्चर चार व छ: वर्षीय पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित करने के बाद आज गुरुवार को शेष सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आयोजित की गई प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम घोषित कर दिए हैं। विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक डॉ. यशवन कुमार ने यह जानकारी देते हुए बताया कि बीएफएससी चार वर्षीय कोर्स, एमएससी एग्रीकल्चर, एमटीक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग, एमएससी गृह विज्ञान, बीएससी (आनंद) कम्प्यूनिटी साइंस चार वर्षीय पाठ्यक्रम, बीएससी एग्रीबिजनेस मैनेजमेंट, बीएससी एग्रीकल्चर चार व छ: वर्षीय पाठ्यक्रमों सहित भौतिक विज्ञान एवं मानविकी, मर्सल विज्ञान व बायोटैकनॉलॉजी महाविद्यालयों के सभी एमएससी और पीएचडी के लिए दो चरणों में प्रवेश परीक्षाएँ आयोजित की गई थीं। इनमें से विश्वविद्यालय ने बीते दिन बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय और बीएससी एग्रीकल्चर छ: वर्षीय पाठ्यक्रमों के परिणाम घोषित किए थे।

डॉ. यशवन कुमार के अनुसार उम्मीदवार उपरोक्त सभी परीक्षाओं के परिणाम व इसमें संबंधित नवीनतम जानकारियां विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर देख सकते हैं। डॉ. यशवन कुमार ने बताया कि बीएससी (आनंद) कम्प्यूनिटी साइंस में कालजल प्रथम, नवकोरत कौर छिंतीय और पुर्णिमा तीसरे स्थान पर रही हैं, जबकि बीएफएससी में नीरज सिंह ने पहला, जिया ने दूसरा और बुलबुल ने तीसरा स्थान पाया है। इसी प्रकार एमएससी एग्रीकल्चर में गुलशान, पूजा और कनिका क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रही हैं। एमएससी गृह विज्ञान में आरती प्रथम, कामना छिंतीय व नैन्सी तृतीय रही हैं। एमटीक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में गौरव व गुनीत क्रमशः प्रथम व छिंतीय स्थान पर रहे हैं। इनके अतिरिक्त एमएफएससी में विशाल सोने में पहला, विशाल ने दूसरा व जय बंसल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया है। एमएससी समाजशास्त्र में सुमेधा सिंह प्रथम व बरखा दूसरे स्थान पर रही हैं। एमएससी भौतिक विज्ञान में शशांक व अनुजा ने क्रमशः पहला व दूसरा स्थान पाया है जबकि पीएचडी (सभी विषय) में अर्चना कुमारत पहले स्थान पर रही है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
भैंना॑ भास॒	१९. ८. २२	५	६४

बीएससी कम्यूनिटी साइंस में काजल एमएससी एग्री. में गुलशन ने बाजी मारी

एचएयू के स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी की प्रवेश परीक्षाओं के नतीजे घोषित

भास्कर न्हूँ | हिंदा

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने बीएससी एग्रीकल्चर चार व छह वर्षीय पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित करने के बाद गुरुवार को शेष सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आयोजित की प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम घोषित कर दिए गए।

विवि के परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार ने बताया कि बीएफएससी चार वर्षीय कोर्स, एमएससी एग्रीकल्चर, एमटेक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग, एमएससी गृह विज्ञान, बीएससी कम्यूनिटी साइंस चार वर्षीय पाठ्यक्रम, बीएससी एग्रीविजनेस मैनेजमेंट, बीएससी एग्रीकल्चर चार व छह

वर्षीय पाठ्यक्रमों महित मौखिक विज्ञान एवं मानविकी, मत्स्य विज्ञान व बायोटेक्नोलॉजी महाविद्यालयों के सभी एमएससी और पीएचडी के लिए दो चरणों में प्रवेश परीक्षाएं आयोजित की गई थीं। इनमें से विश्वविद्यालय ने बीते दिन बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय और बीएससी एग्रीकल्चर छह वर्षीय पाठ्यक्रमों के परिणाम घोषित किए थे।

डॉ. पवन कुमार के अनुसार, उम्मीदवार उपरोक्त सभी परीक्षाओं के परिणाम व इससे संबंधित नवीनतम जानकारियां विश्वविद्यालय की वेबसाइट admissions.hau.ac.in व hau.ac.in पर देख सकते हैं। डॉ. पवन कुमार ने बताया कि बीएससी (ऑनर्स) कम्यूनिटी साइंस में काजल प्रथम, नवकीरत कौर द्वितीय और पूर्णमा तीसरे स्थान पर रही हैं। बीएफएससी में नीरज

सिंह ने पहला, प्रिया ने दूसरा और बुलबुल ने तीसरा स्थान पाया है। इसी प्रकार एमएससी एग्रीकल्चर में गुलशन, पूजा और कनिका क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रही हैं। एमएससी गृह विज्ञान में आरती प्रथम, कामना द्वितीय व नैनी तृतीय रही हैं। एमटेक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में गौरव व गुनीत क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहे हैं। इनके अतिरिक्त एमएफएससी में विशाल सेनी ने पहला, विशाल ने दूसरा व जय बंसल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया है। एमएससी समाजशास्त्र में सुमेधा सिंह प्रथम व अरखा दसरे स्थान पर रही हैं। एमएससी मौखिक विज्ञान में शशीक व अनुजा ने क्रमशः पहला व दूसरा स्थान पाया है जबकि पीएचडी (सभी विषय) में अर्चना कुमारवत पहले स्थान पर रही हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभ्युक्ति	१९.८.२२	५	६

एचएयू : पीएचडी प्रवेश परीक्षा में अर्चना प्रथम

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) ने स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आयोजित प्रवेश परीक्षाओं का परिणाम वीरवार को घोषित कर दिया। पीएचडी (सभी विषय) में अर्चना कुमारत प्रथम रही।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. एसके महता ने बताया कि सभी परिणाम विश्वविद्यालय की वेबसाइट admissions.hau.ac.in, hau.ac.in पर उपलब्ध कराए गए हैं। परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार ने बताया कि बीएससी (ऑनर्स) कम्प्यूनिटी साइंस में काजल प्रथम, नवकीरत कौर द्वितीय और पूर्णिमा तीसरे स्थान पर रही हैं। बीएफएससी में नीरज सिंह प्रथम, प्रिया द्वितीय और बुलबुल तृतीय, एमएससी एग्रीकल्चर में गुलशन पहले, पूजा दूसरे और कनिका तीसरे स्थान पर रही। एमएससी गृह विज्ञान में आरती प्रथम, कामना द्वितीय व नैसी तृतीय, एमटैक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में गौरव पहले, गुनीत दूसरे, एमएफएससी में विशाल सोनी पहले, विशाल दूसरे व जय बंसल तीसरे स्थान, एमएसएसी समाजशास्त्र में सुमेधा सिंह प्रथम व बरखा द्वितीय, एमएसएसी मौलिक विज्ञान में शशांक प्रथम, अनुजा द्वितीय स्थान पर रही। संवाद



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब मेलरा	१९. ४. २२	३	५६

हक्की ने घोषित किए सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. में दाखिले के प्रवेश परीक्षा परिणाम

हिसार, 18 अगस्त (ब्लूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने बी.एस.सी., एग्रीकल्चर 4 व 6 वर्षीय पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित करने के बाद शेष सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आयोजित की गई प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम घोषित कर दिए हैं। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. एस.के. महता ने बताया कि विभिन्न कोर्सों के लिए 2 चरणों में प्रवेश परीक्षाएं आयोजित की गई थीं।

परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार ने बताया कि बी.एस.सी. (आनंद) कम्प्युटरी साइंस में काजल प्रथम, नवकारत कौर द्वितीय और पूर्णिमा तीसरे स्थान पर रही हैं। जबकि बी.एफ.एस.सी. में नोरज सिंह ने पहला, प्रिया ने दूसरा और बुलबुल ने तीसरा स्थान पाया है। इसी प्रकार एम.एस.सी. एग्रीकल्चर में गुलशन, पूजा और कनिका क्रमशः पहली, दूसरे व तीसरे स्थान पर रही हैं। एम.एस.सी. गृह विज्ञान में आरती प्रथम, कामना द्वितीय व नैनीति तृतीय रही हैं। एम.टैक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में गैरब व गुनीत क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहे हैं।

इनके अतिरिक्त एम.एफ.एस.सी. में विशाल सोनी ने पहला, विशाल ने दूसरा व जय बंसल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया है। एम.एस.ए.सी. समाजशास्त्र में सुमेधा सिंह प्रथम व बरखा दूसरे स्थान पर रही हैं। एम.एस.ए.सी. मौलिक विज्ञान में शशांक व अनुजा ने क्रमशः पहला व दूसरा स्थान पाया है, जबकि पीएच.डी. (सभी विषय) में अर्चना कुमारत पहले स्थान पर रही है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आज स्नातकों परिणाम	18.8.2022	--	--

जानकारी

चौ.चरण हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने आज घोषित किए सभी स्नातक परिणाम

स्नातकोत्तर एवं पीएचडी में दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम आयोजित

आज समाज नेटवर्क

हिसार। गौमाता चतुरंग निर्माण कृषि विश्वविद्यालय ने बोर्डसी एटीएसी चार तथा छठ प्रवेश परीक्षाओं की परीक्षा परीक्षा के परिणाम घोषित करने के बाद सभी युक्ति को दो दिन सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी प्रवेशकों में घोषित के लिए अपर्याप्त को गई प्रवेश संभालकों के लिए भवित्व बोर्ड कर दिया। विश्वविद्यालय के कृषिविभाग द्वारा एक के नहार में ज्ञानकारी देते हुए सबका किए गये कार्य, एटीएसी एटीएसी, एटीएसी एटीएसी इंजीनियरिंग, एटीएसी गृह विधान, बोर्डसी (अन्तर्र.) कार्यपाली सदस्य चतुरंग विभाग, बोर्डसी एटीएसी नेटवर्क एवं बोर्डसी एटीएसी चार

तथा चौधरी चरण सिंह स्नातक विभाग द्वारा घोषित किए गये सभी युक्ति के लिए अपर्याप्त को गई प्रवेश संभालकों के लिए एटीएसी विभागों के योगी एवं विद्युतीय और वीजावटी के लिए दो भारतीय युक्ति दूसरे बोर्डसी सभी युक्ति की गई थी। इनमें से विश्वविद्यालय ने दोनों दिन बोर्डसी एटीएसी चार विभाग और बोर्डसी एटीएसी प्रवेशकों के विभिन्न विभागों के विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के लिए दो दिन सभी युक्ति के लिए अपर्याप्त को गई प्रवेश संभालकों के लिए भवित्व बोर्ड कर दिया। इनके अनुसार इमर्जेंसी उपरोक्त सभी युक्तियों के विभाग व इसमें विभिन्न विभाग तात्परीय विश्वविद्यालय की विभागाद्य एवं दोनों युक्तियों के लिए दो दिन सभी युक्ति की गई है।

दो दिन के बाद ने चाहता कि बोर्डसी (अन्तर्र.) कार्यपाली सदस्य ने बोर्डसी एटीएसी बोर्डसी एटीएसी एवं बोर्डसी लैंग्यर एटीएसी पर द्वितीय और तीसरी लैंग्यर एटीएसी पर रही है जबकि बोर्डसी एटीएसी में जीता





चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्बन्धित पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिंह पत्र	18.8.2022	--	--

एचएयू ने घोषित किए विभिन्न प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम



सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने बीएससी एग्रीकल्चर चार व छह वर्षीय पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित करने के बाद आज गुरुवार को ट्रैफ सभी म्यातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी पाठ्यक्रमों में दायित्वे के लिए आयोजित की गई प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम घोषित कर दिए हैं।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. एम.के. महत्त ने बताया कि बीएससी चार वर्षीय कोर्स, एमएससी एग्रीकल्चर, एमटीक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग, एमएससी गृह विज्ञान, बीएससी (आनंद) कम्प्यूनिटी साईंस चार वर्षीय पाठ्यक्रम, बीएससी एग्रीबिजनेस मैनेजमेंट, बीएससी एग्रीकल्चर चार व छह वर्षीय पाठ्यक्रमों सहित मौलिक विज्ञान एवं मानविकी, मत्स्य विज्ञान व बायोटेक्नोलॉजी मानविद्यालयों के सभी एमएससी और पीएचडी के लिए दो चरणों में प्रवेश प्रोक्षण आयोजित की गई थी। इनमें से विश्वविद्यालय ने बीते दिन बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय और बीएससी एग्रीकल्चर छह वर्षीय

पाठ्यक्रमों के परिणाम घोषित किए थे। पहली तीन स्थानों पर रहे थे विद्यार्थी डॉ. पवन कुमार ने बताया कि बीएससी (आनंद) कम्प्यूनिटी साईंस में काजल प्रथम, नवकोरत कौर द्वितीय और पूर्णमा तीसरे स्थान पर रही हैं। जबकि बीएससी में नीरज सिंह ने पहला, शिखा ने दूसरा और अलविल ने तीसरा स्थान पाया है। इन्होंने प्रकार एमएससी एग्रीकल्चर में गृहशन, पूजा और कानिका क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रही हैं। एमएससी गृह विज्ञान में आमतौ प्रथम, कामना द्वितीय व नैमी तृतीय रही है। एमटीक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में गौरव व गृहित क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहे हैं। इनके अतिरिक्त एमएक्ससी में विशाल सोनी ने पहला, विशाल ने दूसरा व जय बदल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया है। एमएसएसी समाजशास्त्र में सुमेधा सिंह प्रथम व बरखा दूसरे स्थान पर रही हैं। एमएसएसी मौलिक विज्ञान में लक्ष्मी व अनुजा ने क्रमशः पहला व दूसरा स्थान पाया है। जबकि पीएचडी (सभी विषय) में अर्वना कुमारत पहले स्थान पर रही है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	19.8.2022	--	--

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने घोषित किए सभी पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम

हिसार : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने बीएससी एग्रीकल्चर चार और
छह वर्षीय पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित करने के बाद
आज शेष सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी पाठ्यक्रमों में दाखिले
के लिए आयोजित की गई प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम घोषित कर दिए
हैं। विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार ने बताया कि
बीएफएससी चार वर्षीय कोर्स, एमएससी एग्रीकल्चर, एमटैक
एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग, एमएससी गृह विज्ञान, बीएससी (आनर्स)
कम्यूनिटी साइंस चार वर्षीय पाठ्यक्रम, बीएससी एग्री बिजनेस
मैनेजमेंट, बीएससी एग्रीकल्चर चार व छह वर्षीय पाठ्यक्रमों सहित
मौलिक विज्ञान एवं मानविकी, मत्स्य विज्ञान व बायोटेक्नॉलोजी
महाविद्यालयों के सभी एमएससी और पीएचडी के लिए दो चरणों में
प्रवेश परीक्षाएं आयोजित की गई थीं। इनमें से विश्वविद्यालय ने बीते दिन
बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय और बीएससी एग्रीकल्चर छ वर्षीय
पाठ्यक्रमों के परिणाम घोषित किए थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त दैरपणा	18.8.2022	--	--

चौ.व.सि. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने आज घोषित किए सभी दाखिले के लिए आयोजित प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम

समस्त हरियाणा न्यूज़
 हिमार। जीभरी चारण सिंह हरियाणा कृषि
 विभवितालय के बोर्डमेंबर एन्ड कंट्रोलर चारण
 इन वर्षीय यातृकालों की प्रवेश वसीधत के
 परिणाम स्थोरित करने के बाद अब गुरुकुरां को
 शेष सभी आतंक यातृकालोंपर एवं पीएचटी
 यातृकालों में दाखिले के लिए आवेदित की
 गई प्रवेश परिवारों के परिणाम स्थोरित कर
 दिए हैं। विभवितालय के कूलमसीच डॉ.
 एम. के. महाना ने यह आनंदकारी देखे हुए, बताया
 कि धौराकालमें चार वर्षीय कोर्स, यातृकालमें
 एकीकालम, एमटीके एन्ड कंट्रोलर इनीशियारिंग,